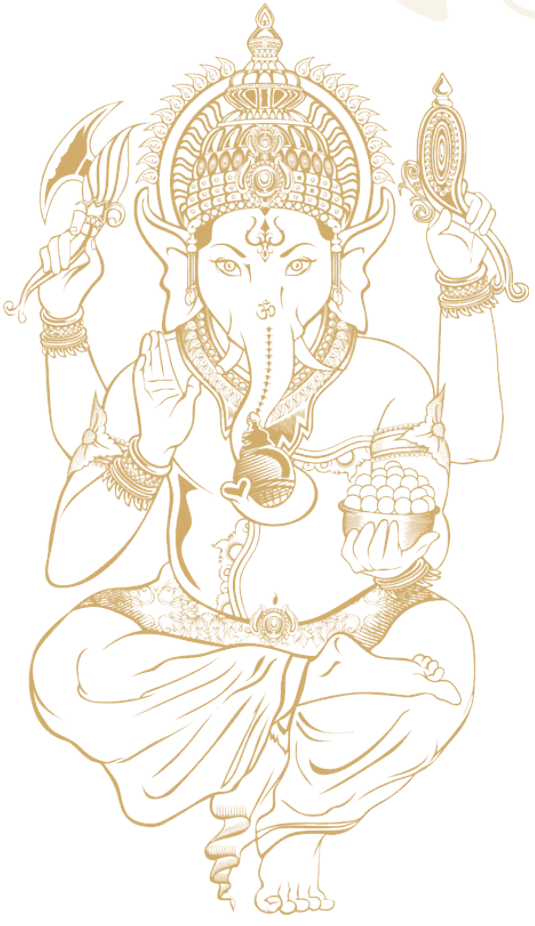

Jaideep Soni

Khushi

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121933704

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
24/10/1996	जन्म तिथि	07/07/2001
गुरुवार	दिन	शनिवार
घंटे 19:15:00	जन्म समय	12:35:00 घंटे
घटी 31:33:40	जन्म समय(घटी)	16:47:47 घटी
India	देश	India
Udaipur	स्थान	Sagwara River
24:36:00 उत्तर	अक्षांश	23:42:00 उत्तर
73:47:00 पूर्व	रेखांश	74:03:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:34:52	स्थानिक संस्कार	-00:33:48 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:37:32	सूर्योदय	05:52:41
18:00:25	सूर्यास्त	19:24:29
23:48:46	चित्रपक्षीय अयनांश	23:52:25

विंशोत्तरी शनि 7वर्ष 5मा 5दि केतु 31/03/2021 31/03/2028		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी सूर्य 0वर्ष 0मा 18दि राहु 26/07/2018 26/07/2036	
केतु	27/08/2021	00:51:16	वृष	लग्न	कन्या	20:23:59	राहु	07/04/2021
शुक्र	27/10/2022	07:36:58	तुला	सूर्य	मिथु	21:21:49	गुरु	01/09/2023
सूर्य	04/03/2023	11:27:04	मीन	चंद्र	मक	09:53:09	शनि	08/07/2026
चन्द्र	03/10/2023	02:58:35	सिंह	मंगल व	वृश्चि	22:20:51	बुध	24/01/2029
मंगल	01/03/2024	02:01:35	तुला	बुध	मिथु	00:43:01	केतु	12/02/2030
राहु	19/03/2025	14:08:39	मीन	केतु व	धनु	12:30:09	शुक्र	11/02/2033
गुरु	23/02/2026	06:55:10	मक	हर्ष व	कुंभ	00:23:38	सूर्य	06/01/2034
शनि	04/04/2027	01:15:14	मक	नेप व	मक	14:06:58	चन्द्र	08/07/2035
बुध	31/03/2028	07:58:59	वृश्चि	प्लूटो व	वृश्चि	19:13:21	मंगल	26/07/2036

लग्न-चलित

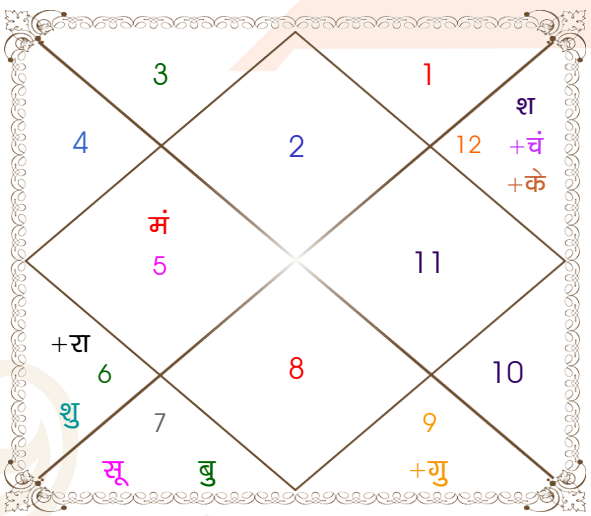

लग्न-चलित

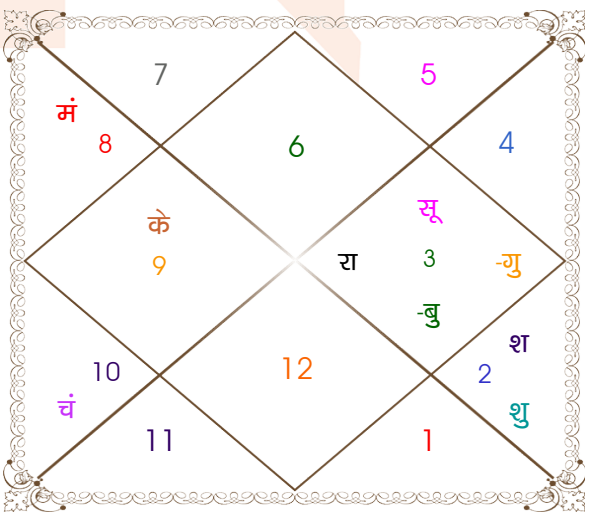

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	चतुष्पाद	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	साधक	प्रत्यारि	3	1.50	--	भाग्य
योनि	गौ	नकुल	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	शनि	5	3.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	मनुष्य	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	मीन	मकर	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	29.50		

Jaideep Soni का वर्ग सिंह है तथा Khushi का वर्ग सिंह है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Jaideep Soni और Khushi का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Jaideep Soni मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

Khushi मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल Khushi कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Jaideep Soni तथा Khushi में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।